बी. एम. ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (एल. एन. एम. यू.)

स्नातक (प्रथम खण्ड) पेपर - II | डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश | दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक 24-07-2020

बहुसंस्कृतिवाद :

बहुसंस्कृतिवाद एक ऐसी विचारधारा या संकल्पना है, जो किसी एक राष्ट्र में विभिन्न संस्कृतियों के लोगों का आपसी सौहार्द व सद्भाव से मिल-जुलकर जीवन बिताना सम्भव मानती है। इसे एक आधुनिक, प्रगतिशील, उन्नत समाज व शक्तिशाली राष्ट्र राज्य का लक्षण समझती है। इसमें जहाँ एक ओर धर्मनिरपेक्षता, सर्वधर्म समभाव, अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का उपाय व राजनीतिक अधिकार शामिल हैं वहीं दूसरी ओर यह ऐसी उपसंस्कृतियों के असन्तोष व विद्रोह, अलगाववाद नस्लीय या धार्मिक घृणा, साम्प्रदायिकता जैसे मुद्दों से भी जूझती है। बहुसंस्कृतिवाद को निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है—

1.> उदार व कठोर बहुसंस्कृतिवाद - उदार सांस्कृतिक वैविध्य के सम्मानता व उसमें सहभागी होने तक सीमित रहता है, लेकिन कठोर में सांस्कृतिक अन्तर्क्रिया में समानता पर बल दिया जाता है।

2.> वैधानिक तथा वास्तविक बहुसंस्कृतिवाद - वैधानिक राजकीय नीतियों द्वारा या कानूनों द्वारा प्रश्रय किया जाता है, तो वास्तविक में सामाजिक संस्कृति का बहुसांस्कृतिक होना ही प्रमुख है।

3.> बहुलतावादी तथा विशिष्टतावादी बहुसंस्कृतिवाद - बहुलतावादी में विभिन्नताओं के संरक्षण पर बल दिया जाता है तथा विशिष्टतावादी में वैविध्य का सम्मान तो करता है, किन्तु विभेदक विशेषताओं को बनाए रखने के लिए सक्रिय नहीं होता।

बी. एम. एस. कालेज बहेरी, दरभंगा (ललि.एन. एम.यू.)
स्नातक (प्रथम खण्ड), पेपर-I
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश
डा. सुभाष चन्द्र सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक 24-07-2020

उदारवाद :

उदारवाद मुख्यतः यूरोप में हुए सांस्कृतिक पुनर्जागरण, धर्म सुधार आन्दोलन, वैज्ञानिक क्रांति व औद्योगिक क्रांति की उपज है। यद्यपि उदारवाद शब्द का प्रयोग 19 वीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ, तथापि एक विचारधारा के रूप में उदारवाद का प्रारम्भ 16 वीं और 17 वीं शताब्दी में हो गया था, जबसामन्तवादी व्यवस्था दम तोड़ रही थी और एक नई राजनीतिक व्यवस्था पनप रही थी। व्यक्तिगत स्वतंत्रता की प्राप्ति और निरंकुश राजसत्ता को चुनौती देने के लिए उदारवाद ने जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वतंत्रता की मांग की, जैसे- बौद्धिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि।

उदारवाद का अर्थ एवं परिभाषाएँ

उदारवाद का अर्थ है- "स्वतंत्रता अर्थात बाह्य प्रतिबन्धों से व्यक्ति की स्वतंत्रता और अपने विश्वास के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता।"

सारटोरी के अनुसार, "उदारवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता, न्यायिक सुरक्षा तथा संवैधानिक राज्य का सिद्धान्त तथा व्यवहार है।"

हॉबहाउस के अनुसार, "स्वतंत्रता उदारवाद का मूल तत्व है।"

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि आज के समाज में उदारवाद की आवश्यकता है।